International Journal of Information Movement Vol.2 Issue IV (August 2017)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 24-27

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय की सीमा से सटे गांवों में विश्वविद्यालय की छवि का अध्ययन

कोमल,
शोधार्थी
एवं
डा0 बंसी लाल
सहायक प्रोफेसर,
जनसंचार एवं मीडिया पौधोगिकी संस्थान
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

सारांशः– विश्वविद्यालय एक ऐसी संस्था है जहाँ पर उच्च शिक्षा दी जाती है। विश्वविद्यालय में अलग–अलग स्थानों से विधार्थी शिक्षा प्राप्त करने आते है। विश्वविद्यालय में हर तरह की संस्कृति के लोग शिक्षा ग्रहण करते है। विश्वविद्यालय की आधारभुत संरचना उसकी बाहरी व आन्तरिक गतिविधियों, विश्वविद्यालय का परिणाम, उसके द्वारा दी जाने वाली तमाम सुविधाए संसाधन छात्रो का बैद्विक स्तर व प्रबंधन उसकी छवि निर्माण करते है। छवि किसी भी संस्थान की पहचान होती है। यह सकारात्मक और नकारात्मक दोनो तरह की हो सकती है। कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय की छवि का अध्ययन करने के लिए विश्वविद्यालय से सटे गाँवों का शोध किया गया। शोध के लिए प्रश्नावली का निर्माण किया गया और चार गाँवो से आंकड़े प्राप्त किये गए।

1.0 प्रस्तावनाः– कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय–कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र भग्वद्गीता की भमि में स्थित है भारत में उच्च शिक्षा का प्रमुख संस्थान है। यह पवित्र ब्रहमसरोवर के दक्षिण तट पर 400 एकड़ में फैला हुआ है। इसकी आधारशिला 1 जनवरी 1957 को भारतीय गणतन्त्र के पहले राष्ट्रपति भारतरत्न डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने रखी थी आज कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय सिखाने कि बौद्धिक क्षमताओं के रूप में समाजिक नैतिक मुल्यों की विश्वस्तरीय शिक्षा भारत व विदेशी छात्रों को प्रदान कर रहा है

2.0 साहित्य समीक्षाः– (1) मैरी ऐल ने 2011 में एक अध्ययन किया इसके माध्यम से इन्होंने बताया कि शैक्षणिक सस्थानों के लिए छवि महत्वपूर्ण है। तो अपने लक्षित दर्शकों के बीच एक सकारात्मक छवि बनाने के लिए चुनौती बनी हुई है। आमतौर पर स्कूलो, कालैजो व अन्य शैक्षिक सस्थानो, विश्वविद्यालयों के लिए इस लिए छवि प्रंबधको के लिए उनकी आन्तरिक बाहरी गतिविधियों व जनसंपर्क आवश्यक उपकरण है।

(2) कार्नैगी मेलाव विश्वविद्यालय अमेरिका–यह अध्ययन 54 हजार विधार्थियों व 500 शिक्षको को लेकर किया जिसमें पीटसबर्ग, न्यूयार्क, वाशिगंटन डीसी बल्टीमर, सिलीकॉन वैली आदि शहरों के विधार्थियों से सुझाव माँगा गया कि विश्वविद्यालय को कैसे एक ब्रांड़ के रूप में स्थापित किया जाए। इन सभी विधार्थियों व अध्यापको से इन्टरनेट साईट के जरिए विचार माँगे गए। इसमें अधिकतर आकड़ों में यह सामने आया कि मीडिया एशोसिएशन का निर्माण किया जाए। व विश्वविद्यालय प्रशासन को मजबुत बनाया जाए। अध्यापकों व छात्रो के बीच संचार को महता दी जाए तथा मिडिया एशोसिएशन विश्वविद्यालय की छवि की गुणवता को सार्थक बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। इसमे निष्कर्ष निकलता कि जनसपंर्क व मिडिया किसी भी संस्थान की छवि बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

3.0 शोध उदेश्यः–

1. विभिन्न माध्यमो द्वारा विश्वविद्यालय से संबधित जानकारी की ग्रामीणों तक पहुंच का अध्ययन।
2. विश्वविद्यालय की छवि का अध्ययन।

3. विश्वविद्यालय द्वारा दी जानी सुविधाओं व संसाधनो के बारे में लोगो की राय का अध्ययन।
4. विश्वविद्यालय के बारे में ग्रामीणों की सोच का अध्ययन।
5. अध्ययन द्वारा पता लगाना विश्वविद्यालय किस तरह की संस्था है।

4.0 शोध प्रकिया :– प्रस्तुत शोध में मुख्य रूप से निदर्शन विधि का चयन किया गया है तथा आकड़ो के संकलन के लिए प्रश्नावली भरवाई गई है। इस शोध के लिए निदर्शन विधि का चुनाव किया गया। सर्वप्रथम देव निदर्शन विधि (लाटरी विधि) द्वारा आस–पास के चार गांवो को चुना गया जिसके परिणामस्वरूप चार गांवो का चयन किया गया जिसमें रतगल, मिर्जापुर, दयालपुर, व बीड़ पीपली को लिया गया। शोध विधि का चयन मुख्यतः स्वभाव स्वरूप, कार्य क्षेत्र और खर्चों को ध्यान में रखकर किया गया। विश्वविद्यालय की सीमा से सटे गाँवों की 100 विभिन्न आयु वर्ग, शिक्षा, व्यवसाय के स्त्री पुरूषों से विश्वविद्यालय की छवि के बारे में जाना गया।

5.0 छवि की अवधारणाः– प्रतिष्ठा और पहचान की लालसा मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृति है व्यक्ति समुह, संस्थान और औधोंगिक प्रतिष्ठान सभी स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ठ पहचान स्थापित करना चाहते है। और समाज पर अपनी मजबुत पकड़ करना चाहते है।

6.0 छवि की परिभाषाः– वाल्टर लिपमैन, पब्लिक ओपिनियन न्यूयार्क 1999.11 आमतौर पर हम पहले किसी चीडा को देखकर परिभाषित नहीं करते है बल्कि पहले हम इसे परभाषित करते है और फिर उसको उसी के अनुरूप देखते है।

6.1 छवि निर्माणः– किसी भी संस्था या सगंठन के लिए उसकी अपनी छवि का विशेष महत्व होता है। सस्था की प्रसिद्वि तथा प्रगति और विकास का मुख्य आधार उसकी छवि ही है अतः सगठन के चहुमुखी विकास के लिए उसकी छवि का निर्माण करना सबसे प्रमुख कार्य है। यह सर्वमान्य सत्य है कि किसी भी संगठन की छवि तथा अपनी विशिष्ठ पहचान बनाने के लिए निरंतर जनता की नजरों में अच्छा दिखना पड़ता है। लोगो को किसी कम्पनी का नाम बता दो वो उसके उत्पाद गिनवाने लगे यदि छवि बनाने वाले तत्वों की देखा जाए तो इन्हे सगठन की छोटी से छोटी चीज में देखा जा सकता इनमें लोगो (सवहव) का अपना विशेष महत्व होता है। इसको विश्वविद्यालय की विशेष शिनाखत माना जाता है। आम लोगो के बीच प्रत्येक संस्था की अपनी छवि होती है। यह अच्छी या बुरी कैसी भी हो सकती है। छवि उत्पन्न नही की जा सकती है हाँ इसे अच्छा या बुरा बनाया जा सकता है। सस्था या सगठन की नितियो, गतिविधियों मे परिवर्तन कर छवि को आकर्षक बनाया जा सकता है।

6.2 छवि निर्माण में जनसंपर्क व मीडिया की भूमिकाः– जनसम्पर्क व मीडिया दोनो का समान कर्तव्य है विश्वसनीयता और छवि निर्माण। जन सम्पर्क का अर्थ है जन–साधारण के साथ विश्वासपूर्ण संबध स्थापित करना। जन संम्पर्क के दो प्रमुख पक्ष होते है एक सुचना को प्रसारित करने वाला तथा दुसरा सुचना ग्रहण करने वाला। जनंसपर्क का समाज के प्रति लंबी अवधि तक कायम रहने वाला दायित होता है। जनसम्पर्क वह प्रक्रिया है जिसमे सगठन में लगे लोगो की अकांक्षाओं और जरूरत को आका जाता है। यह एक ही पक्षीय प्रकिया है। जनसंपर्क निर्माण करना होता है।

6.3 छवि बनने बिगड़ने की प्रकियाः– आधुनिक सुचना तन्त्र या मीडिया छवि बनाने बिगाडने पर ही केन्द्रित है और काफी हद तक इसमें सफल भी हो रहे है मीडिया छवि में परिवर्तन पैदा कर सकता है। मीडिया सुचना प्राप्तकर्ता की सोच को एक खास दिशा में परिवर्तित कर सकता है। ताकि निर्धारित लक्ष्य व रास्ता प्राप्त कर सकें परन्तु यह भी नहीं कहा जा सकता कि मीडिया सुचना। संदेश प्राप्त करता को निर्धारित लक्ष्य तक प्रसारित कर सकता है। मीडिया किसी भी संस्था–संस्थान या विश्वविद्यालय की सम्पूर्ण तस्वीर को प्रस्तुत करता है। आज मीडिया का समाज के लोगो के जीवन में इतना हस्तक्षेप बढ़ गया है कि सामाजिकता को भी नियन्त्रित कर लिया है आज मीडिया की हर खबर, सुचना का असर समाज पर होता है। छवि निर्माण व पुन निर्माण की प्रक्रिया में इस माध्यम की भुमिका गहन हो गई है। जनसपंर्क अपना लक्ष्य कुछ हद तक मीडिया के माध्यम से प्राप्त करता है।

7.0 आकड़ो का विश्लेषण एवं परिचर्चा :– शोध के अध्ययन हेतु 100 नमुने लिए गए अर्थात 100 व्यक्तियों से जानकारी प्राप्त कि गई जिसमें पुरूषों की आवृति 65: गए वह महिलाओं कि 35: आवृति प्राप्त कि गई। शोध अध्ययन में सबसे ज्यादा 20 से 30 आयु वर्ग के लोगो ने प्रश्नावली को भरासबसे कम 51 से 60 आयु वर्ग द्वारा भरा गया।

विश्वविद्यालय का गुणवता के आधार पर आकंलन

तालिका 1.

गाँव	1	2	3	4	5
मिर्जापुर	5	3	4	7	6
दयालपुर	4	2	10	2	4
रतगल	3	2	5	7	8
बीड़ पीपली	9	4	3	7	2
	18	11	28	23	20

इस तालिका के आधार पर पता चलता है कि कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय से सटे गांवो के गुणवता के आधार पर छवि को जानने पर आकड़ो में सामने आया कि बीड़ पीपली के सबसे अधिक वन लोगो ने कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय की 1 नम्बर पर अंकित किया जबकि रतगल के 8: लोगो ने 5 नम्बर पर रखा। इसके अलावा आकड़ो से साामने आया कि कुल चार गांवो से 18: लोगो ने कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय को 1 नम्बर दिया जबकि 20: लोगो ने इसको 5 नम्बर। सबसे अधिक 28: लोगो ने कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय को 3 नम्बर पर रखा।

अध्ययन शुल्क वहन का आकंलन

तालिका 2.

	सहमत	पूर्णता सहमत	अहसमत	पूर्णता अहसमत	पता नहीं	कुल:
विधार्थी	14	9	12	7	2	44
किसान	6	0	2	0	3	11
गृहणी	5	1	2	5	1	14
नौकर	8	0	4	0	0	12
अन्य	8	3	5	3	0	19
	41	13	25	15	6	100

उपरोक्त तालिका मे व्यवसाय को जब अध्ययन शुल्क से जोड़ कर देखा गया तो सामने आया कि कुल 44: छात्रों में से 14: छात्र छात्रा अध्ययन शुल्क पर सहमत पाए गए जबकि 7: छात्र अध्ययन शुल्क से पूर्णता असहमत दिखे 11: किसानों में से 5: किसान सहमत व 2: किसानो ने अध्ययन शुल्क पर असहमति जताई। कुल 100: लोगो के अध्ययन शुल्क पर सामने आया कि 41: अध्ययन शुल्क पर सहमत 13: पूर्णता सहमत 25: अहसमत 15: पूर्णता असहमत जबकि 6: की इसके बारे में कुछ नही पता।

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय एक आर्दश सस्थान

तालिका 3.

	सहमत	पूर्णता	अहसमत	पूर्णता	पता नहीं	कुल:

		सहमत		अहसमत		
विधार्थी	25	12	4	2	1	44
किसान	5	3	3	0	0	11
	6	3	4	1	0	14
गृहणी	7	3	2	0	0	12
नौकर	17	3	2	0	0	19
अन्य		0				
	60	21	15	3	1	100

तालिका अनुसार 100 उतरपालनों में से 60ः लोग विश्वविद्यालय को आर्दश सस्थान मानते है। जबकि 15ः लोग इस बात पर असहमत है कुल 44 प्रतिशत छात्रों से भरवाई गई प्रश्नावनी से पता चला की 25 प्रतिशत विधार्थी इस बात से सहमत है व 12 प्रतिशत पूर्णतः सहमत है और 2 प्रतिशत विधार्थी ने इस पर असहमति जताई। 6 प्रतिशत गृहिणी विश्वविद्यालय को आर्दश संस्थान मानती है 4 प्रतिशत नहीं।

8.0 निष्कर्षः शोधकर्ता ने अपने स्तर पर इस शोध में स्वयं लोगो से मिलकर प्रश्नावली भरवाई जिसे यह निष्कर्ष निकलता है किः–

1. अधिकतर ग्रामीण कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय को गुणवता के आधार पर 3 स्थान देते है।
2. अधिकतर ग्रामीण विश्वविद्यालय जाने के लिए परिवहन व्यवस्था से खुश दिखाई दिये।
3. विश्वविद्यालय का अध्ययन शुल्क देने में सक्षम है।
4. अधिकतर लोग मानते है कि विश्वविद्यालय का बौद्विक स्तर अच्छा है।
5. छात्राओं की सुरक्षा को लेकर अधिकतर लोगो की राय सन्तोष जनक रही।

9.0 सदर्भ ग्रथ सूचीः–

1. कोरे कृषवैल, डेविड़ कैम्पबैल, (2008) एन ओथेनटिक लिडरशिप ईमेज
2. कैथ बुथरिक, (2010) इन्टरोडुसिंग पब्लिक रिलेशन थूयरी एण्ड प्रैकिटस
3. कौइारी सी. आर, 2008 रिसर्च मैथ्ड़ोलोजी, मैथ्ड एण्ड टेकनिक्स
4. श्री वास्तव डी. एन.ः अनुसंधान विधिया, साहित्य प्रकाशन आगरा

Website & link:-

www.jstore.org
www.mapsotindia.com
www.wikipeadia.com
www.kuk.ac.in